अजित फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित बाल पत्रिका माह अक्टूबर 2025 वर्ष 6 अंक 2

चहलपहल

अनुक्रमणिका

संपादकीय 3

कहानियां

अंतर	वीरेन्द्र बहादुर	4
किसका घर ज्यादा.	राजकुमार जैन	6
प्रेम के दो मीठे..	संदीप पांडे	10
माटी का दीपक	पूनम पांडे	13
मायका	प्रियंका सौरभ	22
तितलियां	पूनम पांडे	24

कविताएं

दीवाली मुसकाई	महेन्द्र वर्मा	07
अंधेरे में उजियारा	डॉ. प्रदीप कुमार	07
हैड बने चींकू..	डॉ. राकेश चक्र	08
मेंढक	शालिनी शर्मा	08
प्यारी गिलहरी	टीकेश्वर सिन्हा	09
तितली हमें...	रमेश श्रीवास्तव	09
वचन निभाया....	नलिन खोईवाल	12
दीप प्यार का	अशोक आनन	12
गिनती का गीत	डॉ. भगवान	14
तितली उड़...	डॉ. मीरा सिंह	21

विविध

बच्चों का कोना	15 से 17	
भूल–भूलैया	चांद मोहम्मद घोसी	18
दुनियां के देश	संजय पुरोहित	19
जाने आकाश के.....	संजय श्रीमाली	25

अजित फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित
संपादक - संजय श्रीमाली
अक्टूबर 2025

आप अपनी रचनाएं इस ईमेल पते पर भेजे
chahalpahalnew@gmail.com

मुख्य आवरण पृष्ठ अंकित चित्र
माधव द्वारा बनाया गया है।

संपादकीय

हमें महापुरुषों की जीवनियां पढनी चाहिए

प्यारे बच्चों

इस माह आपका चहेता त्यौंहार दीपावली है। दूसरा हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जयंती भी है। गांधी जयंती वाले दिन ही दशहरा है। तो आपके लिए इस महीन मौज-मस्ती करने हेतु खुब अवसर है। सबसे पहले हम बात करते है राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी की। आप सब उनके बारे में कुछ न कुछ जानते है। बच्चों, मैं आपको बताना चाहूंगा की गांध ीजी की सबसे मजबूत बात थी कि वह हमेशा सत्य का साथ देते, अंहिसा के पथ पर चलते थे तथा उनकी कथनी और करनी में अंतर नहीं था। यही गुण उनको महान बनाते है तथा आज पूरे विश्व में उनको सम्मान दिया जाता है। हमें उनकी पुस्तकें पढनी चाहिए तथा उनके गुणों एवं विचारों से सीख लेकर अपने जीवन में उनको आत्मसात करना चाहिए।

फिर बात करते है त्यौंहारों की दशहरा में रावण दहन करके बुराई पर अच्छाई की जीत का संदेश दिया जाता है। हमें भी अपने जीवन में जो बुराइया है उनका दहन करना होगा अर्थात उनको छोड़कर सदैव अच्छे मार्ग पर चलना चाहिए। बुरी आदतों से दूर रहकर संस्कारी जीवन की तरफ बढना चाहिए।

दीपावली सबसे लम्बा चलने वाला त्यौंहार है। घरों की सफाई से यह पर्व आरम्भ होता है जोकि घरों की साज सजावट तक चलता है। बाजारों में रौनक बढती है। चारो ओर रोशनी से घर एवं बाजार सजाये जाते है। नये पकवानों के साथ-साथ नए वस्त्र एवं आतिशबाजी का मजा लिया जाता है। घरों में दीपक जलाकर खुशियां मनाई जाती है। हम एक-दूसरे से मिलते है।

बच्चों मेरा आपने कहना है कि आप ग्रीन पटाखे उपयोग में ले, ज्यादा शोर एवं बारूदभरे पटाखे उपयोग में न ले। उनको परिवार के बड़े सदस्यों की देखरेख में बहुत ही सावधानी से जलाएं। ज्यादा पटाखों से प्रदूषण भी ज्यादा होता है तो आप सीमित आतिशबाजी करके इस त्यौंहार को आनन्दमय रूप से मना सकते है। दीपावली की शुभकामनाओं सहित....

संजय श्रीमाली

अंतर

वीरेंद्र बहादुर सिंह

एक घना जंगल था, जिसमें दिन में भी अगर कोई खो जाए तो फिर उसे ढूंढ़ना मुश्किल हो जाता था। उस जंगल में सभी तरह के जानवर और पक्षी रहते थे, साथ ही छोटी सी मानव बस्ती भी थी। जंगल में तो जंगलराज चलता था। जो ताकतवर होता, वही मजे करता था। लेकिन चालाक लोमड़ी को कभी ताकत का उपयोग करना नहीं पड़ता था। वह तो शेर की चापलूसी करके अक्सर अपना पेट भर लेती थी। लेकिन इधर उसे तकलीफ़ होने लगी थी। क्योंकि शेर के पैर में कांटा चुभ गया था, इसलिए वह अपनी मांद से बाहर नहीं निकल पा रहा था। लोमड़ी को ही उसके लिए खाने की तलाश में निकलना पड़ता था। एक दिन उसने देखा कि एक कौआ शहर की ओर से उड़ता हुआ आया और एक पेड़ की डाल पर बैठ गया।

चित्र : स्तुति बिस्सा

उसकी चोंच में एक पूरी थी। कौआ भी भूखा था, इसलिए उसने पूरी को अपने दोनों पैरों के बीच रख कर खाने की तैयारी शुरू कर दी। यह देख कर लोमड़ी के मुंह में पानी आने लगा कि काश! यह पूरी उसे मिल जाती। तभी उसे याद आया कि कौआ प्रशंसा करने से जल्दी ही खुश हो जाते हैं। अगर उसकी थोड़ी तारीफ़ कर दी जाए तो यह फूल कर पगला जाएगा। इसलिए लोमड़ी ने कौए की तारीफ़ शुरू कर दी, वाह कौआ भाई! आप कितने शक्तिशाली है! आपकी कैसी नुकीली चोंच है और सब से बढ़िया तो आपकी आवाज है। आप कितना मीठा गाते हैं। अरे आपके सामने तो मोर और कोयल भी फीके लगते हैं।

कौआ सोचने लगा कि क्या सचमुच वह इतना अच्छा गाता है ? तभी लोमड़ी ने आगे कहा, कौआ भाई, कितने दिन हो गए आपका कोई गाना सुने ? आज एक गाना सुना कर मुझे धन्य कर दो। बस, फिर क्या था! कौए ने तान लेने के लिए एक पैर उठाया तो दोनों पैरों के बीच दबाई पूरी नीचे गिर गई। लोमड़ी पूरी को देख रही थी और कौआ लोमड़ी को!

कौआ सोचने लगा कि अब वह क्या करे ? कितनी मेहनत के बाद यह पूरी मिली थी। जिसने भी यह पूरी बनाई थी, उसने कीतनी मेहनत से बनाई होगी। कितनी बड़ी पूरी थी। इससे तो उसके दो–तीन दिन आराम से कट जाते। लेकिन हाय रे नसीब। कौवी सच ही कहती थी कि अगर कोई तारीफ करे तो खुश होने से पहले सोचना चाहिए कि वह सच कह रहा है या झूठी बातें कह रहा है। तारीफ से खुश नहीं होना चाहिए और निंदा से दुखी नहीं होना चाहिए। आज झूठी तारीफ से खुश होकर उसने अपना प्यारा भोजन खो दिया!

इसके बाद कौए को अपनी मां की बात याद आ गई। मां कहती थी कि कैसी भी मुसीबत आए, हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। कौए ने लोमड़ी से कहा, जंगल के राजा शेर के पैर में कांटा चुभ गया है, इसलिए वह शिकार के लिए नहीं निकल पा रहे हैं। उन्होंने आज मुझसे अपने लिए भोजन की व्यवस्था करने को कहा था। यह पूरी मैं उन्हीं के लिए लाया था। लेकिन अब मुझे लगता है कि मैं उन्हें यह पूरी पहुंचा नहीं पाऊंगा।

चित्र : मोहित

शेर का नाम सुन कर लोमड़ी को पसीना छूट गया। वैसे भी राजा जी इन दिनों गुस्से में रहते हैं, ऊपर से अगर उन्हें पता चला कि उनका खाना मैं ने चट कर दिया है तो उसकी खैर नहीं होगी। पूरी छोड़ कर लोमड़ी अपनी पूंछ उठा कर भाग खड़ी हुई। इसके बाद कौए ने निश्चित हो कर पूरी का आनंद लिया।

पता– जेड–436ए, सेक्टर–12, नोएडा

किसका घर ज्यादा अच्छा

राजकुमार जैन राजन

नदी में पानी कम था। उसमें पड़ी रेत और गोल–गोल पत्थर बहुत सुंदर लग रहे थे। पास के टीले पर रहने वाला चूहा नदी तट पर पानी पीने पहुंचा। तभी उसकी नज़र सामने दूसरे तट पर पड़ी, जहाँ एक लोमड़ खड़ा था। नमस्ते लोमड़ चाचा, क्या हालचाल है ? चूहे ने पूछा। नमस्ते चूहे भाई! हाल–चाल बुरे तो नहीं हैं, पर अच्छे भी नहीं हैं। लोमड़ बोला– मेरी मांद में जगह बहुत छोटी है। उसमें बहुत गरमी रहती हैं। जब करवट बदलता हूँ तो बगलें दीवारों से रगड़ खाती हैं।

मेरी मुसीबत उल्टी है, चूहा बोला– बारिश में ज़मीन कट जाने के कारण मेरा घर ज्यादा ही खुला–खुला हो गया है। अरे, तो इसमें कौनसी मुसीबत की बात है ? हम अपने घरों की अदला–बदली कर लेते हैं। और दोनों ने घर बदलने का फैसला कर लिया।

चूहा लोमड़ की मांद में पहुंचा। उसने चारों ओर सिर घुमा कर देखा। फिर खुद को असुरक्षित महसूस कर रोने लगा– हाय, मैं इतनी बड़ी गुफा में क्या करूँगा ? यहाँ तो कोई बिल्ली मुझे आ दबोचेगी। कौआ उठा ले जाएगा। मैं कहीं छिप भी नहीं सकता।

तभी लोमड़ भी लौट आया– तुम्हारे बिल में तो मैं घुस ही नहीं पाया। यह नहीं हो सकता है, चूहा बोला– चलो मैं तुम्हारे मुँह से अपना मुँह मिलाकर देखता हूँ। चूहा तो लोमड़ की नाक पर चढ़कर लेट ही गया, फिर बोला– ज़रा सोचो तो, कितना छोटा हूँ मैं।

लोमड़ बोला– ज़रा देखो तो, कितना बड़ा हूँ मैं। अब हम क्या करें ? चलो फिर से अदला– बदली कर लेते हैं। अपने–अपने घरों में चले जाते हैं। अपने घर से प्यारी कोई जगह नहीं। चूहे ने कहा।

हाँ, ठीक है, चलो लोमड़ ने खुश होकर समर्थन किया। अब दोनों ही सन्तुष्ट व खुश थे। इसके बाद उन्होंने कभी अपने घर की शिकायत नहीं की।

पता – आकोला, चित्तौड़गढ़

दीवाली मुसकाई

महेंद्र कुमार वर्मा

जंगल में दीवाली आई,
खुशियों की सौगातें लाई।

सबने मंगल दीप जलाया,
अंधियारे की शामत आई।

सबने घर को खूब सजाया,
दीप जले खुशियां इठलाई।

चीते ने बम फोड़े अनगिन,
बन्दर ने बन्दूक चलाई।

थाली में चकरी जी नाची,
फूलझड़ी ने धूम मचाई।

हिरणी लाई खूब पटाखे,
शोर मचा जंगल में भाई।

शेरू की दावत में आकर,
सबने खाई खूब मिठाई।

ढोल बजाया भालू जी ने,
मीठे सुर में कोयल गाई।

देख खुशी सबके मुखड़े पे,
खुश हो दीवाली मुसकाई।

चित्र : भाग्यश्री शर्मा

पता– बी–68 ओल्ड मिनाल रेसीडेन्सी, भोपाल

अंधेरे में उजियारा लाना है

डॉ. प्रदीप कुमार मुखर्जी

आज फिर एक दीया जलाना है,
मन का अंधेरा दूर भगाना है।
पटाखे बजने का हो रहा शोर,
आतिशबाज़ी का भी चल रहा ज़ोर।
ज्योत्सना फुलझड़ी जला रही,
हंसती हुई प्रीति उसे देख रही।
आज फिर एक दीया जलाना है,
अज्ञान का अंधेरा दूर भगाना है।
अनार प्रकाश की छटा फैलाता,
रॉकेट तेज़ी से नभ में उड़ता।
राजू चरखी को घूमते देख रहा,
पिंटू उसे देख–देख कर नाच रहा।
आज फिर एक दीया जलाना है,
अंधेरे में उजियारा लाना है।

चित्र – वाणी शर्मा

पता – 15, पटपड़गंज दिल्ली

हैड बनें चिंकू तोता

डॉ राकेश चक्र

चित्र – अवनि श्रीमाली

पंछी नित ही खुशियाँ देते,
आकर अपने घर।
खेलें–कूदें पढ़ें किताबें,
रहते सदा निडर।।

समय से आ स्कूल में पढ़ते,
हैड बनें चिंकू तोता।
बुलबुल पिंकी पाठ पढाएँ,
गीत तिरंगा का होता।

कौआ पन्नू योग सिखाएँ,
प्राणायाम जी भर।
पंछी नित ही खुशियाँ देते,
आकर अपने घर।।

गौरैया अंशी पढवाएँ,
हिंदी प्यारी भाषा जी।
फुटकी जी संगीत सिखाएँ,
जीवन की परिभाषा जी।

खुश रहने से स्वस्थ रहें वह,
लंबी रहे उमर।
पंछी नित ही खुशियाँ देते,
आकर अपने घर।।

पता–90 बी, शिवपुरी
मुरादाबाद उ.प्र

चित्र – राम भादाणी

मेंढक

शालिनी शर्मा

मेंढक करता टर्र–टर्र,
पानी में लगाता झर्र–झर्र।
चलांग लगाता पर्र–पर्र,
बच्चों को भाता घर्र–घर्र।।

हरी–हरी घास में कूदे,
कमल पत्तों पर भी झूले।
कूट–कूट के कदम बढ़ाता,
सबका मन वह खूब लुभाता।।

बरसात आई, खुशियाँ लाई,
ताल–तलैया गाने गाई।
टर्र–टर्र की धुन सुनाता,
सबको हँसता–गाता भाता।।

पता– रूद्रपुर उत्तराखंड

प्यारी गिलहरी

टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'

अमरूद की डाल पर,
प्यारी गिलहरी।
लगती है हर हाल पर,
न्यारी गिलहरी।
तोते से कर ली,
यारी गिलहरी।
साथ रहने की कर ली,
तैयारी गिलहरी।
देखो सबकी हो गयी,
दुलारी गिलहरी।
उसे ढूँढते आ गयी,
सारी गिलहरी।

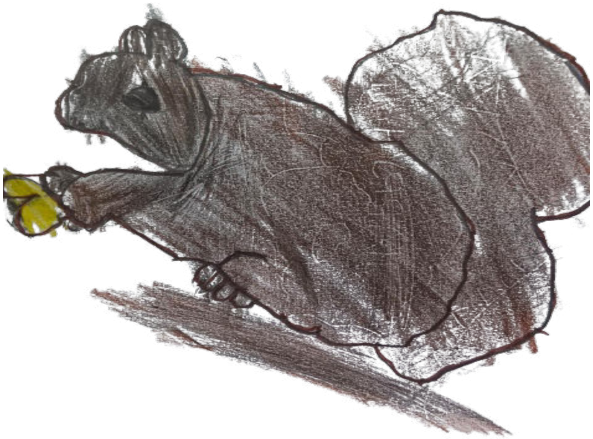

चित्र – मोहन जोशी

पता –घोटिया–बालोद, छत्तीसगढ़

तितली हमें बना दो पापा

रमेश श्रीवास्तव

चित्र – अवनि श्रीमाली

रंग–बिरंगी तितली जैसी
पापा मुझमें पंख लगा दो
मैं भी उड़ती रहती हरदम
ऐसा मुझमें प्राण जगा दो

फूलों संग इतराती रहती
और झूमती परियों के संग
पापा जीवन की बगीया में
ऐसा तुम अनुराग जगा दो

हो जाऊं तेरी डाली का
एक सुनहरा ख्वाब के जैसा
बनकर रहूं आंखों का तारा
बस इतना एहसान करा दो

पता– ख्वाजपुरा, पटना, बिहार

प्रेम के दो मीठे बोल

संदीप पांडे 'शिष्य'

मालिनी आदर्श विद्यालय में पढाती है। उसको इस विद्यालय में बारह वर्ष हो गये थे। वह एक समर्पित शिक्षक थी। वह ग्यारहवीं कक्षा की क्लास टीचर थी तथा अपनी कक्षा के हर विद्यार्थी को अपना परिवार मानती थी। सात दिन बाद ही दशहरा आने वाला था और उसकी कक्षा में धूम मची हुई थी। इन दिनों दीपावली का उत्सव की तैयारी हो रही थी। सभी के द्वारा कुछ न कुछ किया जा रहा था। आज एक नया दाखिला हुआ। यह एक स्थानांतरण का केस था। सुगंधा के पिता का स्थानांतरण हुआ था इसलिए वह दशहरे के समय विद्यालय मे आई थी। नयी छात्रा होने के कारण, आज नई विद्यार्थी, सुगन्धा का मालिनी ने स्वागत और अन्य विद्य ार्थियो से परिचय कराया। मालिनी सभी विद्यार्थियो से दोस्ताना संबंध रखती थी और सब बच्चे उसकी कक्षा मे प्रसन्न और उत्साहित रहते थे। सुगंधा ने एक गीत सुनाया। बहुत ही मधुर था। सब दीपावली की मस्ती में मगन रहते।

चित्र – राम भादाणी

पर सुगन्धा का रूखा व्यवहार था। वह खामोश रहती थी। उसकी चुप्पी दीवाली के उस उत्साहित माहौल को ऊंचाई देने में अवरोध बन गया। तीन दिनो तक सुगन्धा के व्यवहार को समझने के पश्चात मालिनी जान चुकी थी कि वो किसी मानसिक आधात से पीडित है। वो उसे दिल खोल कर बुलवाने की कोशिश करती पर हर बार नाकाम रहती। वो अक्सर चुपचाप ही अपना पूरा दिन गुजार देती। इतने दिनों मे वह एक खास दोस्त भी नहीं बना पाई

थी। मालिनी हिन्दी पढ़ाती थी। एक दिन उसने सब बच्चो को 'दीपावली पर परिवार की चमक' विषय पर निबंध लिखने का कार्य दिया। सब बच्चे दो–दो पेज लिखकर लाए पर सुगंधा ने सिर्फ एक पंक्ति लिखी थी 'यह एक वहम है'।

मालिनी ने सुगंधा को स्टाफ रूम मे बुलाया और अकेले मे पूछा 'क्या तुम्हारे परिवार में लोग तुम्हे प्यार नहीं करते ?' इतना सुनते ही सुगंधा की रुलाई फूट पडी। उसने रोते हुए बताया कि उसकी जन्मदात्री तो जन्म देते के सालभर बाद ही दुनिया छोड़कर चली गई। सौतेली माता उस पर बचपन से अत्याचार कर रही है। प्यार की जगह नफरत झलकता है। सारा प्यार उसके छोटे भाई के लिए होता है। पिता घर पर कम रहते है पर माता उनके भी कान भरती रहती है जिससे वो भी कई दफा उससे नाराज हो जाते है। वो घर पर किसी अनाथ की तरह जीवन गुजार रही है।
ऐसा बोलने के बाद सुगंधा को अपना दिल हल्का लगने लगा था। उसने अपने व्यवहार के लिए माफी के साफ जाने की इजाजत मांगी तो मालिनी ने उसे गले लगाते हुए कहा, तुम्हारे मन के हर दुख को मैं सुनने को तैयार हूँ। पर तुम्हे दूसरो के लिए अपना रुखापन छोड़ना होगा। प्रेम गहरे से गहरे घाव को भर देता है। घर से स्नेह प्राप्ति की रिक्तता तुम अपने मित्रो से अच्छा व्यवहार कर प्राप्त कर सकती हो। हो सकता है तुम्हारे बदले व्यवहार से तुम्हारे माता–पिता भी तुम्हे स्नेह देने लगे। सुगंधा को पहली बार किसी ने आत्मिय सुझाव प्राप्त हुआ था। वो मन ही मन सोचने लगी कि वो माता– पिता से जिस व्यवहार की अपेक्षा रखती है वो खुद भी तो उन्हे नही दे पाती। बल्कि उसने सभी से एक शिकवा सा पाल लिया है जो किसी से आत्मिक संबंध बनाने में एक बडा अवरोध था। अपनी कक्षा मे पंहुचने से पहले उसे अपनी गलती का बोध हो चुका था और चेहरे पर एक मुस्कान के साथ वो अपनी बैंच पर जा रही थी। अब उसने दीपक की रोशनी पर एक गीत भी तैयार कर लिया था। मालिनी ने उसकी बहुत तारीफ की।

उसके बाद दो ही दिनो मे उसने चार अच्छे दोस्त बना लिए थे जिनके साथ वो खूब हंसने–बोलने लगी थी। मालिनी मैडम से अक्सर वो अपने मन की बात करने लगी थी। महिने भर मे ही उसने बताया कि उसकी मां के व्यवहार मे उसके प्रति सकारात्मक परिवर्तन आने लगा है। अब दीपावली का उत्सव बेहद ही खास होने वाला था।

पता– दुर्गेश, पुष्कर रोड, कोटरा

वचन निभाया बापू ने

नलिन खोईवाल

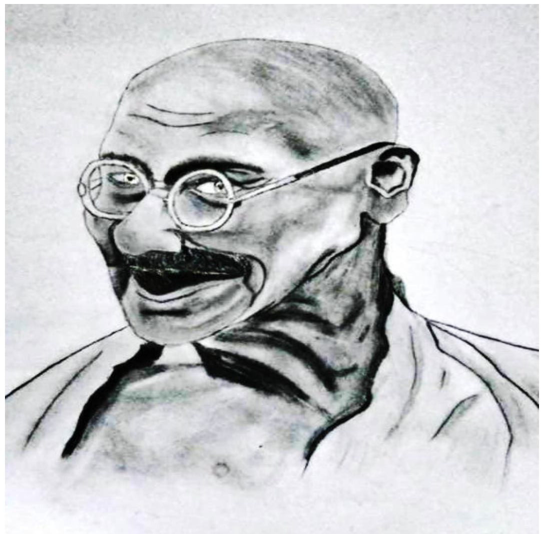

चित्र – नेहांश ओझा

कर्म का पाठ दुनिया को सिखाया है।
अहिंसा की राह चलकर दिखाया है।।
सच्चाई के मार्ग से कभी न हटे हैं।
नेकी के पथ पर बापू सदा डटे हैं।।

जीवन में अनुशासन को अपनाया है।
प्राणों से ज्यादा वचन को निभाया है।।
वतन पर जिसने न्योछावर की जान है।
जमाने में पाया उसने सम्मान है।।

बापू ने शांति से रहना सिखाया है।
हम भारतवासी का मान बढ़ाया है।।
नाम जिसका तारों में जगमगाया है।
राष्ट्रपिता महात्मा गांधी कहलाया है।।

मन में आजादी का अलख जगाया है।
गर्व से सर ऊंचा हमने उठाया है।।
प्राण देने की जो सौगंध खाता है ।
जग में वह बलिदान अमर हो जाता है।।

३७६–ए, सुदामा नगर, इंदौर

दीप प्यार का

अशोक आनन

आओ ! गुड़िया !
संग – संग खेलें।
हाथी – घोड़ा
हम – तुम ले लें।

यों ही बचपन
बीत न जाए।
खेलें – कूदें
नाचें – गाएं।

आओ ! चिड़िया
जैसे चहकें।
फूलों जैसे
हरदम महकें।

तितली जैसे
रंग – बिरंगे।
दिन हों अपने
रात उमंगें।

नफ़रत आंख
मिला न पाए।
दीप प्यार का
द्वार जलाएं।

मुस्कानों के
फूल बिखेरें।
द्वार – द्वार हम
सांझ – सवेरे।

**पता– जूना बाज़ार,
शाजापुर, म.प्र.**

माटी का दीपक

पूनम पांडे

रामपुर नामक गांव में सभी लोग मिलजुलकर रहते थे। इन दिनों दीपावली की तैयारी हो रही थी। सभी कुछ न कुछ कर रहे थे। कोई घर में रंगाई कर रहा था। कोई अपना बगीचा सजा रहा था। कोई खुद ही अपने लिए कुरता सी रहा था। सभी आनंद से सराबोर थे। एक शाम किसी छोटी–सी दुकान में चारपाई पर बैठकर गांव के जमींदार एक मटकी तथा कुलहड बेचने वाले से सहज भाव से बातें कर रहे थे। तभी उनका एक मित्र वहां आ पहुंचा। उस मित्र ने जमींदार को इशारे से बाहर बुलाया और कहा, 'इस तरह छोटे लोगों के साथ क्यों बात करते हो ? अपनी मान–मर्यादा का कुछ तो ख्याल रखा करो।' यह सुनकर जमींदार ने मुस्कराते हुए पूछा, 'तो फिर तुम क्यों मेरे जैसे 'छोटे' आदमी के साथ उठते–बैठते और गपशप करते हो ?' मित्र ने कहा, 'तुम तो मेरे मित्र हो... और मित्रता में कोई छोटा–बड़ा, अमीर–गरीब नहीं होता।' यह उत्तर सुनकर जमींदार हौले से मुस्कराए और बोले, 'यही बात तो मैं तुम्हें समझाना चाहता हूं कि मित्रता में कोई अमीर–गरीब या छोटा–बड़ा नहीं होता। वह दुकानदार मेरा मित्र है और मुझे उतना ही प्रिय है, जितने तुम। अब बताओ, उससे घुल–मिलकर बातें करके मैंने क्या गलती की ?' उनके इस सवाल ने उनके मित्र को बेहद शर्मिंदा कर दिया। उसने उसी समय उस दुकानदार से माटी के दीपक और कुलहड़ खरीदे।

चित्र – किराडू

पता – दुर्गेश, पुष्कर रोड, कोटरा, अजमेर

गिनती का गीत
डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय

एक हमारी गुड़िया रानी
दो रोटी वह खाती है,
तीन किताबें लेकर बैठी
चार बार पढ़ जाती है।

पॉच कदम ही रोज चले वह
छः दिन पर सिर धोती है
सात रंग का चित्र बनाकर
आठ अंक पा रोती है।

नौ रत्नों में एक वही तो
दस तक ही गिन पाती है
रोज सुनाकर मॉ को गिनती
गुड़िया खुश हो जाती है।

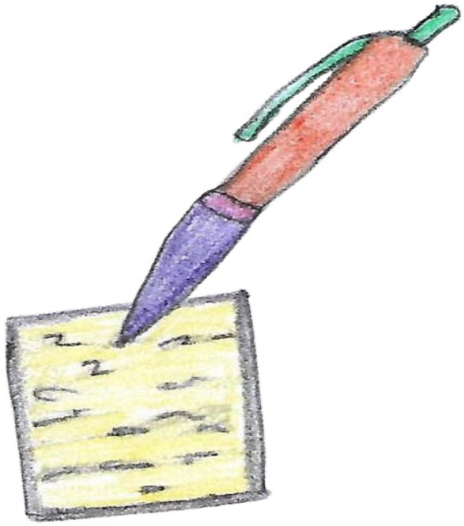

पता – गंधियांव करछना प्रयागराज

तितली उड़ चली कहां
डॉ मीरा सिंह 'मीरा'

ओ तितली उड़ चली कहां पर
कुछ तो मुझे बताओ।
लगती हो तुम कितनी प्यारी
पास कभी तो आओ।।

रंग–बिरंगी पंख सुनहरे
पाई कहां बताओ।
ले चल अपने साथ मुझे तुम
जगह वहीं दिखलाओ।।

कोयल गाती गीत सुरीली
तुम भी गीत सुनाओ।
चलीं कहां तितली शर्माकर
जरा ठहर भी जाओ।।

दो पल ठहरो प्यारी तितली
मुझको जरा बताओ।
क्या तुम भी जाती विद्यालय
बस्ता चलो दिखाओ।।

पता – डुमराँव, जिला–बक्सर, बिहार

बच्चों का कोना

सुदर्शना हर्ष

दीक्षा चौधरी

अयान दास

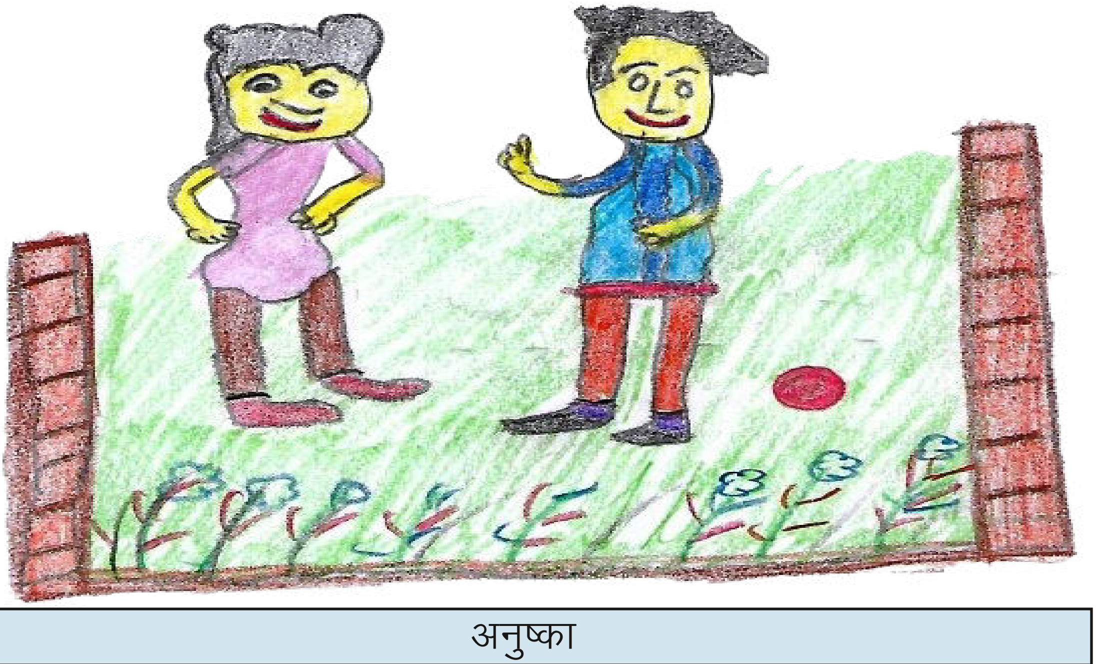

अनुष्का

दिव्यांशी शर्मा

अक्षय शर्मा

भूल-भुलैया

चांद मोहम्मद घोसी

रावण को कौनसे बाण ने भेदा ?

नीचे खड़ा वीर बालक रावण के ऊपर बाणों की बोछार किये जा रहा है। अंत में एक बाण ने लंका के दुष्ट राजा रावण की नाभि को भेद ही लिया। बताइए वह बाण कौनसे नंबर का हैं।

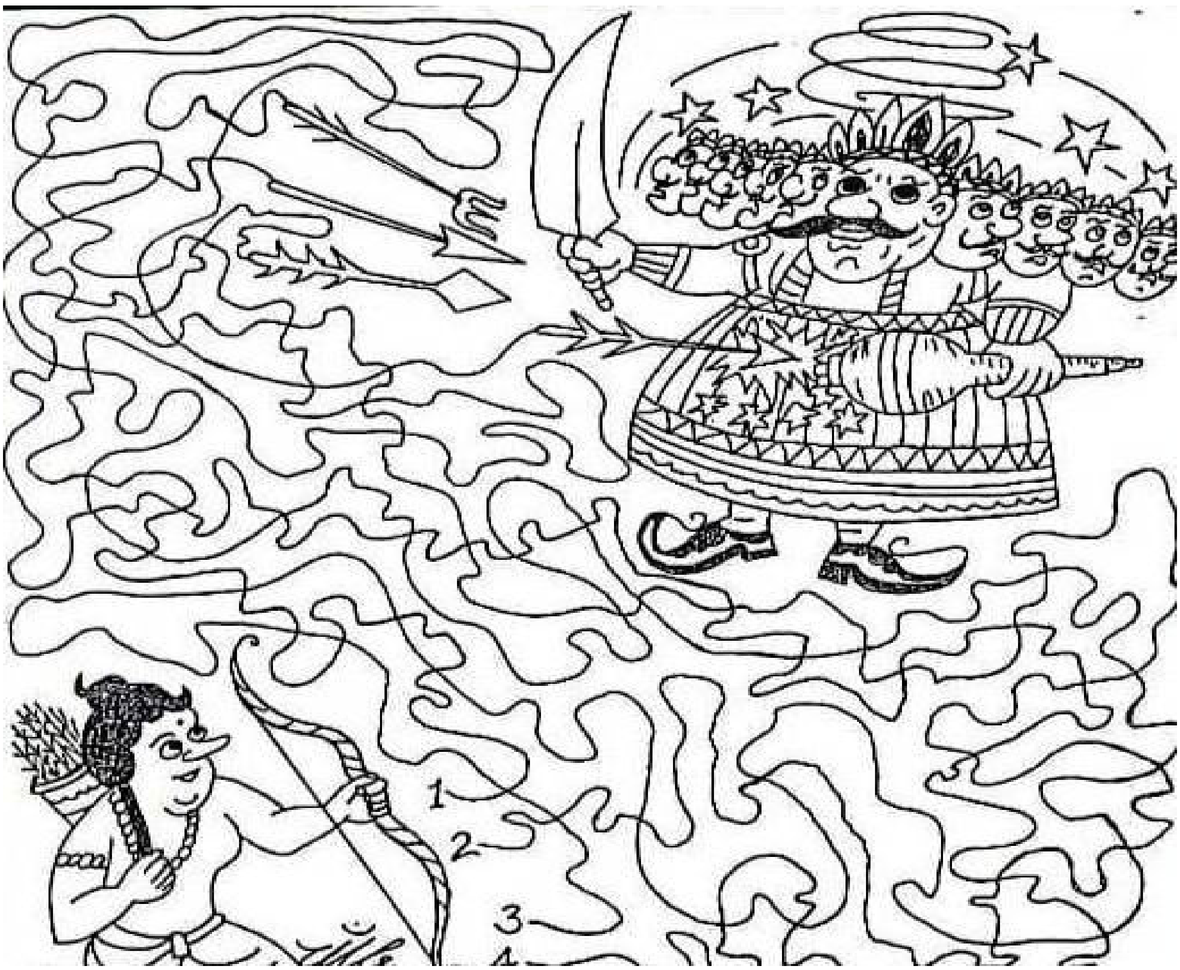

उत्तर :- बाण न. 3 ने भेदा।

पता – नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी

दुनिया के देश

बोलिविया

संजय पुरोहित

हेलो फ्रेण्ड्स। कैसे हैं आप ? अच्छे से, मेहनत से, एकाग्रता के साथ पढाई करते हुए जीवन में हमेशा आगे बढ़ते रहना चाहिए। याद रखें एक स्टूडेंट का सबसे पहला काम अध्ययन यानी स्टडी करना होता है। पढ़ाई के साथ साथ हमें देश और दुनिया की जानकारी भी रखनी चाहिये। इसीलिये हम हर एडिशन में आपके लिये एक देश की यात्रा का विवरण लेकर आते हैं। तो आज हम आपको लिये चलते हैं साउथ अमेरिका के एक बहुत सुंदर और डाईवर्सिटी से भरे देश बोलिविया की ओर। बोलिविया साउथ अमेरिका के मिडिल में चारों ओर से भूमि से घिरा हुआ देश है। बोलिविया के बॉडर्स ब्राजील, पेरू, चिली, अर्जेंटिना और पराग्वे से लगते है। यहां एंडीज पर्वत, अमेजॉन पर्वत, अमेजॉन रेन फोरेस्ट और विशाल उच्च पठार क्षेत्र शामिल है। बोलिविया रीजन पहले इंका सभ्यता का हिस्सा था। इंका से पहले बोलिविया में तिवानाकू सभ्यता फली फूली थी। 16वीं सेंचुरी में स्पेन ने बोलिविया को अपनी कॉलोनी बना लिया था और बोलिविया की अपार सोना चांदी से फायदा उठाया। 6 अगस्त 1825 को बोलिविया को स्पेन से स्वतंत्रता मिली। बोलिविया का नाम स्वतंत्रता सेनानी 'साईमन बोलिवर' के नाम पर रखा गया। बोलिविया अब एक संवैध ाानिक लोकतांत्रिक गणराज्य यानी कॉन्स्टीटयुशनल डेमोक्रेटिक रिपब्लिक है।

साभार – www.kids.nationalgeographic.com

बोलिविया की इकॉनोमी में एग्रीकल्चर

का महत्वपूर्ण स्थान है। यहां मक्का, आलू, चावल, सोयाबीन, कॉफी, कोका प्रमुख फसलें हुआ करती है। बोलिविया में माईनिंग सबसे बड़ा उद्योग है। बोलिविया में चांदी, टिन, जस्ता और लिथियम का उत्पादन होता है। इनके अलावा वस्त्र, फूड प्रोसेसिंग, एनर्जी और नेचुरल गैस क्षेत्र में भी बोलिविया अग्रणी देशों में है। बोलिविया में बहुत से

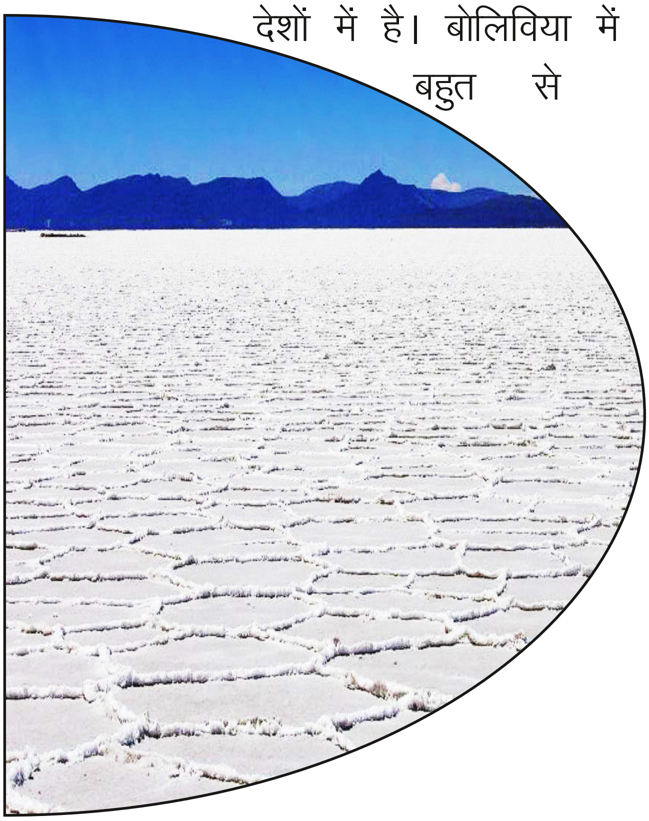

साभार – www.en.wikipedia.org

प्राकृतिक और कल्चरल अट्रेक्शन हैं जिनमें दुनिया का सबसे बड़ा नमक का मैदान 'सालार दे उयूनी', दुनिया की सबसे ऊंचाई पर स्थित नौवहन योग्य झील 'लेक टीकूनाका' शामिल है। इसके अलावा दुनिया की सबसे ऊंचाई पर स्थित प्रशासनिक राजधानी 'ला पाज' और जैव विविधता से भरपूर मैडीडी नेशनल पार्क भी पर्यटन आकर्षण के केन्द्र हैं। बोलिविया में जगुआर, लामा, एंडियन कोंडोर, पिंक डॉल्फिन और बंदर की अनेक प्रजातियां पाई जाती है। बोलिविया में कई नदियां हैं। इनमें मामोर नदी, बेनी नदी, पिलकोमायो नदी प्रमुख हैं। ये सभी नदियां अमेजॉन नदी से जुड़ी हुई हैं। बोलिविया दुनिया का एकमात्र ऐसा देश है जहां एक या दो नहीं बल्कि 36 अधि ाकारिक भाषाएं हैं। इनमें स्पेनिश मुख्य भाषा है। इनके अलावा क्वेचुआ, आयमारा, गुआरानी शामिल है। बोलिविया का ध्वज तीन रंगों का होता है। बोलिविया का राष्ट्रगान है – बोलिवियन्स, एल हाडो प्रोपिसियो, यह 1851 में लिखा गया था। ऐंडियन कोंडोर बोलिविया का राष्ट्रीय पक्षी है। यह दुनिया के सबसे बड़े उड़ने वाले पक्षियों में से एक है। इसी प्रकार एंडीज क्षेत्र में एक बहुत उपयोगी जानवर पाया जाता है–लामा। यह बोलिविया का राष्ट्रीय पशु है। बोलिविया के लोग खानपान के बहुत शौकीन होते हैं। यहां बनने वाली एक प्रकार की मसालेदार भरवां पेस्ट्री 'साल्टेनस' बोलिविया की नेशनल डिश है। बोलिविया की करंसी का नाम बोलिवियानो है। बोलिविया की दो कैपिटल्स है। सुक्रे संवैधानिक राजधानी और ला पाज प्रशासनिक राजधानी है। इन के अलावा सांता क्रूज दे ला सियेरा, कोचाबांबा, ओरूरो, पोतोसी मुख्य शहर हैं। बोलिविया के अधिकांश लोग ईसाई हैं। ईसाईयों में भी

कैथोलिक धर्म ज्यादा प्रचलित है। बोलिविया का एल अल्तो दुनिया का सबसे ऊंचाई पर स्थित अंरराष्ट्रीय हवाई अड्डा है। बोलिविया का ओरूरो कार्निवल सबसे बड़ा उत्सव होता है। इसे यूनेस्को उत्सव सूची में शामिल किया गया है। इसमें हजारों लोग पारम्परिक वेशभूषा में शामिल होते हैं। बोलिविया के लापाज शहर की मी टेलीफेरिको केबल कार दुनिया की सबसे उंची केबल कार प्रणाली है जो पब्लिक ट्रांसपोर्ट के काम आती है। बोलिविया की आबादी कुछ हद तक यूरोपीय मूल के लोगों से बनी है। इनमें स्वदेशी के साथ मेस्तिजो शामिल हैं। एंडीज क्षेत्रीय म्यूजिक के लिये प्रसिद्ध है जैसे पान फ्लूट, चारंगो आदि। यहां के 'डियाबलाडा' और 'कैपोरालेस' जैसे पारम्परिक नृत्य त्यौहारों में मुख्य है। बोलिविया की महिलाएं अपनी पारम्परिक पोशाक 'पोलेरा' पहनती हैं। ला पाज शहर में एक अजीब मार्केट है। इसका नाम सुनकर आप चौंक जायेंगे। इसका नाम है चुड़ैलों का बाजार। यहां जड़ी बूटी, ताबीज और पारम्परिक औषधियां मिलती है। बोलिविया में खतरनाक लेकिन रोमांचक रोड ट्रेकिंग और साईक्लिंग के लिये एक मशहूर स्थान है जिसका नाम है 'एल केमिनो डे ला म्यूरट' है जिसे 'डेथ रोड' भी कहा जाता है। बोलिविया कॉलोनाईज्ड इमारतें, म्यूजियम और हिस्टोरिकल चर्च के लिये भी अपना विशेष स्थान रखता है।

हमें उम्मीद है कि आपको बोलिविया देश की यह शाब्दिक यात्रा पसंद आई होगी। आपके सामान्य ज्ञान में भी वृद्धि हुई होगी। अगले अंक में चलेंगे एक और देश की सैर पर। तब तक के लिये बाय बाय।

पता – समीप सूरसागर, बीकानेर

आखिरी ताला

सत्यवान सौरभ

एक सरकारी पुस्तकालय में आखिरी दिन था। नए बिल्डिंग प्लान में उसे "गैर–आवश्यक" घोषित किया गया था। लाइब्रेरियन ने कहा, "पचास साल से यहाँ काम कर रहा हूँ, आज पहली बार किताबें रोती दिखीं।" छात्रों ने मोमबत्तियाँ जलाकर विरोध किया, लेकिन आदेश जारी हो चुका था।

एक लड़की ने पूछा, "किताबें कहाँ जाएँगी ?" अफसर ने कहा, "गोदाम में रखी जाएँगी, डिजिटल लाइब्रेरी आ रही है।" लेकिन उस गाँव में बिजली दिन में तीन घंटे आती थी, और इंटरनेट तो सपना था। आखिरी ताला लगाते वक्त लाइब्रेरियन ने फुसफुसाया, "किताबें बुझी नहीं हैं, हम ही अंधे हो गए हैं।"

पता –कौशल्या भवन, बड़वा (सिवानी) भिवानी,

मायका

प्रियंका सौरभ

तेरहवीं की भीड़ अब छँट चुकी थी। जो रिश्तेदार आए थे, वे अब लौट चुके थे। दीवारों पर अब भी माँ की तस्वीर के नीचे टिमटिमाता दीया जल रहा था। अगरबत्ती की धीमी महक अब पूरे घर में उदासी की तरह फैल रही थी। घर के हर कोने में एक सन्नाटा था, एक खालीपन जो माँ के जाने से पैदा हुआ था। यही घर जहाँ कभी माँ की चहलकदमी होती थी, अब जैसे ठहर गया था।

चारु माँ के कमरे में बैठी थी। उसकी गोद में माँ की साड़ी रखी थी, वही पीली रंग की जिसे माँ हर सोमवार को पहना करती थीं। आँखों से आंसू बहते जा रहे थे, और होंठ खामोश थे। भैया उसके पास आए, कंधे पर हाथ रखा और धीरे से बोले, चारु, अब सब काम निपट गए हैं... माँ को तो हम रोक नहीं सके... लेकिन अब तुझे जाना है, ना ? चारु ने बस गर्दन हिलाई, फिर भर्राए गले से बोली, हाँ भैया, अब चलती हूँ। माँ को यही पसंद था कि विदाई मुस्कान के साथ हो... मगर कैसे मुस्कुराऊँ भैया, जब माँ की गोदी खाली हो गई है। भैया ने जेब से एक चाभी निकाली और उसके हाथ में रख दी। बोले, रुक... एक काम और बाकी है। ये ले, माँ की अलमारी की चाभी। उसमें जो तेरे काम का हो, जो यादगार हो, वो तू ले जा। माँ की चीजों पर बेटी का हक सबसे पहले होता है।

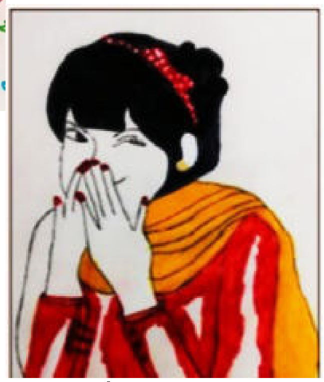

चित्र – आकांक्षा

चारु चौंकी। उसकी उंगलियों ने चाभी को थामा तो जैसे कुछ यादें उसके मन में जीवित हो उठीं। उस अलमारी में

माँ ने न जाने क्या–क्या सहेज कर रखा होगा। लेकिन अगले ही पल, चारु ने चाभी भाभी की तरफ बढ़ा दी। भाभी, माँ की सेवा आपने की है... बहू नहीं, बेटी बनकर। इस चाभी पर हक आपका है। आप ही खोलिए। भाभी थोड़ा सकुचाईं, पर भैया की स्वीकृति के बाद उन्होंने अलमारी खोली। अलमारी खुलते ही एक धीमी सी खुशबू बाहर आई कृ माँ की खुशबू। अंदर करीने से रखे गए गहने, साड़ियाँ, चूड़ियाँ, कुछ पुराने खत और एक फोटोग्राफ एलबम था। सब कुछ जैसे माँ की उपस्थिति को जीवित रखे था।

भैया बोले, चारु, देख... ये माँ के कीमती गहने और कपड़े हैं। जो तुझे पसंद आए, वो तू ले जा। याद के तौर पर। चारु ने एक–एक चीज को देखा। सजी हुई हरे रंग की साड़ी, जो माँ पूजा में पहनती थीं। सोने की चूड़ियाँ, जो उन्होंने शादी में पहनी थीं। मोती का हार, जो नानी ने माँ को दिया था। हर चीज़ में एक कहानी थी, एक इतिहास। लेकिन चारु ने कुछ भी नहीं उठाया। उसने हल्की मुस्कान के साथ कहा, भैया, मुझे इन गहनों से ज्यादा कीमती कुछ और चाहिए। क्या? चारु, हमने तो अलमारी तक नहीं छुई थी। तेरे सामने सब कुछ है। तुझे क्या चाहिए, साफ–साफ बता। चारु ने एक पल के लिए आंखें बंद कीं, फिर भाभी की तरफ देखा और कहा, मुझे वो कीमती निशानी चाहिए, जो हर बेटी अपने मायके से लेकर जाती है। वो निशानी जो उसे अहसास दिलाए कि माँ के जाने के बाद भी उसका मायका सलामत है। मुझे वो अपनापन चाहिए, वो भरोसा चाहिए कि जब भी मन भारी हो, मैं इस घर में लौट सकूं बिना किसी संकोच के।

भाभी की आंखें भर आईं। उन्होंने चारु के हाथ थामे और कहा, दीदी, आप चिंता मत कीजिए। माँजी की तरह मैं भी चाहूंगी कि ये घर हमेशा आपका मायका बना रहे। आप जब चाहें, इस घर में आ सकती हैं, आपकी जगह यहाँ हमेशा रहेगी।

चारु मुस्कुराई, लेकिन उस मुस्कान में भावनाओं का समुंदर था। उसने फोटोग्राफ एलबम उठाया। पन्नों को पलटते हुए माँ की गोद में उसका बचपन, स्कूल की यूनिफॉर्म में तस्वीरें, भाई के साथ झगड़े, भाभी की शादी के समय की तस्वीरें, सब सामने आने लगे। भाभी, अगर आप इजाज़त दें तो मैं ये एलबम ले जाऊँ ? यही मेरी सबसे कीमती निशानी है। जब भी खोलूंगी, माँ की हँसी सुनाई देगी, भैया की डांट याद आएगी, और भाभी की ममता का अहसास होगा। भाभी ने हामी भरी।

चारु ने एलबम को सीने से लगाया। फिर वह माँ की तस्वीर के पास गई, माथा टेका और बोली, माँ, मैं जा रही हूँ। लेकिन जानती हूँ कि तू यहीं है... इन दीवारों में, इन यादों में, और सबसे बढ़कर, मेरे मायके के प्यार में। विदा के वक्त भैया ने दरवाजे तक छोड़ा। दरवाजे पर खड़े होकर चारु ने आखिरी बार घर की तरफ देखा। बरामदे में माँ का झूला अब भी हिल रहा था, हवा से। और उसे लगा जैसे माँ वहीं बैठी मुस्कुरा रही हो– जैसे कह रही हो, जा बेटी, अब तेरा ससुराल भी तेरा है... लेकिन ये घर, ये कोना हमेशा तेरा रहेगा। चारु को याद आ रहा था जब माँ पहली बार बीमार पड़ी थीं। अस्पताल के बिस्तर पर लेटी माँ ने उसका हाथ थामकर कहा था, जब मैं ना रहूं तो रोना मत... बस अपना ससुराल भी मायके जैसा बना लेना.. और इस घर को हमेशा घर समझना। तब उसने माँ की बात को बस एक सांत्वना समझा था। पर आज, उस हर शब्द का अर्थ गहराई से महसूस हो रहा था।

चित्र – दिव्यांशी शर्मा

बचपन की वो गर्म दोपहरें याद आईं जब माँ खस की चटाई बिछाकर सब बच्चों को अमरसिंह की कहानियाँ सुनाया करती थीं। जब रात में डर लगे तो चारु माँ की गोद में जाकर सो जाती थी। जब पहली बार साइकिल चलानी सीखी तो माँ ही पीछे से पकड़े रही थीं। और जब कॉलेज जाना हुआ था, माँ की आँखों में डर था, मगर होठों पर दुआ। चारु ने कितनी बार माँ की ममता को हल्के में लिया था, पर आज समझ में आया कि माँ के बिना घर की छाया ही चली जाती है।

गाड़ी में बैठते वक्त चारु ने पीछे की सीट पर वो एलबम रखा और मन ही मन दोहराया, माँ की अलमारी से सबसे कीमती निशानी मिल गई... मेरा सलामत मायका।

पता– उब्बा भवन, आर्यनगर, हिसार हरियाणा

जाने आकाश के बारे में

संजय श्रीमाली

प्यारे बच्चों कुछ नवीन जानकारियां आपके लिए फिर लेकर आया हूं। खगोल विज्ञान अंतहीन है। इसमें बहुत ही रोचक एवं विस्मय घटनाएं होती रहती है।

साभार www.hindustantimes.com

जिसमें से मुख्य घटनाओं की यहां संक्षिप्त जानकारी आपके साथ साझा कर रहा हूं। इस माह में दिनांक 7 अक्टूबर को पूर्णिमा है। इस दिन हम सुपरमून को टेलिस्कोप के माध्यम से देख सकते है। इस पूर्णिमा को शुरुआती मूल अमेरिकी जनजातियों द्वारा हंटर्स मून के रूप में जाना जाता था। इस चंद्रमा को ट्रैवल मून और ब्लड मून के नाम से भी जाना जाता है। यह 2025 के तीन सुपरमूनों में से पहला भी है। चंद्रमा पृथ्वी के सबसे करीब होगा और सामान्य से थोड़ा बड़ा और चमकीला दिख सकता है।

इसी दिन ड्रेकोनिड्स उल्का बौछार भी होगा। ड्रेकोनिड्स एक मामूली उल्कापात है जो प्रति घंटे केवल 10 उल्काएं पैदा करता है। यह धूमकेतु 21पी गियाकोबिनी–ज़िनर द्वारा छोड़े गए

साभार www.nhm.ac.uk

धूल के कणों से निर्मित होता है, जिसे पहली बार 1900 में खोजा गया था। ड्रेकोनिड्स एक असामान्य शॉवर है जिसमें अधिकांश अन्य शॉवर्स की तरह सबसे अच्छा दृश्य सुबह के बजाय शाम को होता है। शॉवर हर साल 6–10 अक्टूबर तक चलता है और इस साल 7 तारीख की रात को चरम पर है।

पूर्णिमा के बाद अमावस्या की बात कर लेते है तो दिनांक 21 अक्टूबर को

अमावस्या है। अमावस्या के दिन आकाश में चन्द्रमा न होने के कारण आप आकाशगंगाओं और तारा समूहों जैसी धुंधली वस्तुओं का निरीक्षण करने के लिए यह महीने का सबसे अच्छा समय है क्योंकि इसमें हस्तक्षेप करने के लिए चांदनी नहीं होती है।

इसी माह के अन्तिम सप्ताह यानि 21, 22 अक्टूबर को ओरियोनिड्स उल्का बौछार होगी। यह भी एक औसतन उल्का बौछार है। यह अपने चरम पर प्रति घंटे 20 उल्काएं पैदा करती है। यह धूमकेतु हैली द्वारा छोड़े गए धूल के कणों से उत्पन्न होता है, जिसे प्राचीन काल से जाना और देखा जाता रहा है। शॉवर प्रतिवर्ष 2 अक्टूबर से 7 नवंबर तक चलता है। इस वर्ष यह 21 अक्टूबर की रात और 22 अक्टूबर की सुबह चरम पर होता है। यह ओरियोनिड्स के लिए एक उत कृष्ट वर्ष है। चंद्रमा पूरी रात गायब रहेगा, जिससे एक उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए आसमान में अंधेरा छा जाएगा। सबसे अच्छा दृश्य आधी रात के बाद किसी अंधेरी जगह से होगा। उल्काएं ओरायन तारामंडल से विकीर्ण होंगी, लेकिन आकाश में कहीं भी दिखाई दे सकती हैं।

इस माह किसी ग्रह को साफ तौर से देखना है तो वह है बुध।

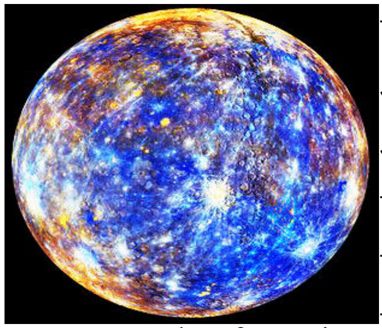
साभार www.edgeofspace.in

दिनांक 29 अक्टूबर बुध अपने महानतम पूर्वी बढ़ाव पर प्रदर्शित होगा। बुध ग्रह सूर्य से 23.9 डिग्री के अधिकतम पूर्वी विस्तार पर पहुँचता है। यह बुध को देखने का सबसे अच्छा समय है क्योंकि यह शाम के आकाश में क्षितिज के ऊपर अपने उच्चतम बिंदु पर होगा। सूर्यास्त के तुरंत बाद पश्चिमी आकाश में निचले ग्रह को देख सकते हैं।

आकाश में ग्रहों की स्थिति
(12 अक्टूबर 2025)

ग्रह	उदय	अस्त	मध्याहन	स्थिति
बुध	8:03	19:02	13:33	दुर्बल
शुक्र	05:00	17:14	11:07	अच्छा
मंगल	08:29	19:23	14:8	दुर्बल
गुरू	00:55	13:45	06:55	अच्छा
शनि	17:09	04:57	23:03	अच्छा
यूरेनस	20:22	9:55	03:09	सामान्य
नेपच्यून	17:14	05:12	23:13	दुर्बल

अजित फाउण्डेशन

प्रिय सदस्यों

आपको 'चहल-पहल' पढ़कर अच्छा लगा होगा। 'चहल-पहल' के पिछले अंको को पढ़ने हेतु आप अजित फाण्डेशन की वेब साईट https://ajitfoundation.net पर जाकर डाउनलोड कर सकते है। साथ ही अजित फाउण्डेशन पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों की सूचि https://www.libib.com/library लिंक पर देख सकते है और युवाओं के लिए होने वाली मासिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

संस्था के सामुदायिक पुस्तकालय में पुस्तकें पढ़ने के साथ-साथ खिलौने, पेन्टिग एवं अन्य रोचक गतिविधयों में भाग ले सकते है। इससे आपको बहुत कुछ नया सीखने को मिलेगा।

पुस्तकालय का समय - दोपहर: 12:00 से सायं 7:00 बजे तक है।

हमारा पता – अजित फाउण्डेशन
आचार्यों की ढाल, सेवगों की गली, बीकानेर। मो. 7014198275 9509867486
अपनी रचनाएं ईमेल पर ही भेजे chahalpahalnew@gmail.com